DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR
ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
समास
Part -4
LIVE
18-07-2024 05:00 PM

समास

सूत्र - अव्ययीभावः 2.1.5

सूत्रवृत्ति - अधिकारोऽयं प्राक् तत्पुरुषात् ।

सूत्रानुवाद - यह अधिकार (सूत्र) है, इसका अधिकार यहाँ से "तत्पुरुषः" सूत्र से पूर्व तक होगा।

व्याख्या - अव्ययीभावः यह एकपदात्मक सूत्र है। यह अधिकार सूत्र है अतः तत्पुरुषः" सूत्र से पूर्व सूत्र तक जो भी समास विधान किया जाएगा वहाँ इसका अधिकार रहेगा और उसकी समास के साथ साथ अव्ययीभावसंज्ञा भी होगी।

सूत्र - अव्ययं

विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु। 2.1.6

सूत्रवृत्ति - विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह नित्यं समस्यते। प्रायेणाऽविग्रहो नित्यसमासः, प्रायेणाऽस्वपदविग्रहो वा।

सूत्रानुवाद - विभक्त्यर्थादि में विद्यमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है। प्रायः नित्य समास का अविग्रह (जिसका लौकिक विग्रह न कहा जा सके) अथवा अस्वपदविग्रह (जिसका समस्यमान पदों से भिन्न पदों से लौकिक विग्रह दर्शाया जाए) होता है।

व्याख्या - अव्ययम्, विभक्तिसमीप... वचनेषु, यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक विधि सूत्र है। यहाँ 'सुवान्मन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे से सुप् तथा 'समर्थः पदविधिः समर्थ पद की अनुवृत्ति होती है जिसका तृतीयान्ततया विभक्ति विपरिणाम करके 'समर्थन कर दिया जाता है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होता है 1. विभक्ति, 2. समीप, 3. समद्धि (ऋद्धि का आधिक्य), 4. व्यृद्धि (ऋद्धि का अभाव), 5. अर्थाभाव (वस्तु का अभाव), 6. अत्यय (नष्ट होना, अतीत होना, गुजर जाना). 7. असम्प्रति (अब युक्त (उचित) न होना),

8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द की प्रकाशता वा प्रसिद्धि), 9. पश्चात् (पीछे), 10. यथा (योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य), 11. आनुपूर्व्य (क्रमानुसार, क्रमशः), 12. यौगपद्य (एक साथ होना), 13. सादृश्य (सदृश), 14. सम्पत्ति (अनुरूप आत्मभाव), 15. साकल्य (सम्पूर्णता), और 16. अन्त (समाप्ति) इन सोलह अथर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय है उसका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है। इस समास में विकल्प नहीं कहा गया अतः यह नित्यसमास है।

विभक्त्यर्थ का उदाहरण - अधिहरि हरी इति इस अस्वपदविग्रह में हरि डि+अधि इस अलौकिकविग्रह में अधिकरणरूप विभक्त्यर्थ में विद्यमान अव्यय अधि का हरि ङि इस सुबन्त के साथ 'अव्ययं विभक्ति..... इत्यादि सूत्र से समास करने पर प्रश्न होता है कि हरि डि+अधि इस अवस्था में किस पद को पूर्व रखा जाए तो इसके लिए अग्रिम सूत्र प्रस्तुत है –

सूत्र - प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् । 1.2.43

वृत्ति - समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात् ।

अनुवाद - समासशास्त्रे = समास विधायक सूत्रों में प्रथमानिर्दिष्टम् प्रथमाविभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसकी उपसर्जन संज्ञा होती हैं।

व्याख्या - प्रथमानिर्दिष्टम्, समासे, उपसर्जनम् यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। समासे पद से समासशास्त्र अर्थात् समास विधायक सूत्र का ग्रहण किया जाता है।

यदि समासे पद को यथाश्रुत मान लिया जाए तो समास में जो प्रथमाविभक्त्यन्त है उसकी उपसर्जन संज्ञा हो जाएगी। जैसे कृष्णं श्रितः इस विग्रह में श्रित पद प्रथमान्त श्रूयमाण है, तो इसकी उपसर्जनसंज्ञा होने पर पूर्वनिपात होने लग जाएगा और कृ ष्णश्रित यह अभीष्टरूप सिद्ध नहीं होगा।

अतः समासे पद से समासविधायक सूत्र ग्रहण करने पर कृष्णं श्रित इस विग्रह में समास के विधायक सूत्र में "द्वितीया श्रितातीतपतितगत्यस्तप्राप्तापन्नैः द्वितीया पद प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट है। श्रितादि तो तृतीयान्त है। अतः समास विधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट की ही उपसर्जनसंज्ञा होती है। प्रस्तुत उदाहरण में समास विधान करने वाले सूत्र 'अव्ययं विभक्ति' में 'अव्ययम्' पद प्रथमान्त है।

अतः प्रकृत सूत्र से यह 'उपसर्जन' संज्ञक होगा। 'हरि ङिः अधि' में 'अधि' यह अव्यय है। अतः यह उपसर्जन हुआ। तो इस प्रकार अधि की उपसर्जन संज्ञा हो जाने पर उसके प्रयोजनीभूत कार्य को बताने हेतु अग्रिमसूत्र –

DSSSB TGT & PGT SCHOLAR BATCH संस्कृत

सूत्र - उपसर्जनं पूर्वम् । 2.2.30

वृत्ति - समासे उपसर्जनं प्राक् प्रयोज्यम्। इत्यधेः प्राक् प्रयोगः। (सुपो लुक, एकदेशविकृतस्यानन्यत्वात्प्रातिपदिकसंज्ञायां स्वाद्युत्पत्तिः, 'अव्ययीभावश्च' इत्यव्ययत्वात् सुपो लुक अधिहरि।)

अधिहरि सु

अनुवाद - समास में जिसकी उपसर्जन संज्ञा की है उसका पूर्वप्रयोग होता है। जैसे- हरि ङि अधि में अधि उपसर्जन संज्ञक है। अतः प्रकृत सूत्र से उसका प्रयोग पहले होगा। तब स्थिति होगी अधि हरि ङि

व्याख्या - उपसर्जनम् पूर्वम् यह द्विपदात्मक सूत्र है। उपसर्जनम् पूर्वम् इति द्वितीयैकवचनान्तं क्रियाविशेषणम्। समासे सप्तमी एकवचनान्त का प्राक्कडारात्समासः से अधिकृत 'समासः' पद को सप्तम्यन्ततया विपरिणत कर लिया जाता है।

'प्रयोज्यम्' का अध्याहार करते हैं। तो इस प्रकार समुदित सूत्रार्थ फलित होता है समासे समास में उपसर्जनसंज्ञक को पूर्व अथाव पहले प्रयुक्त करना चाहिये। समास में किसी को पहले प्रयुक्त करना पूर्वनिपात तथा बाद में प्रयुक्त करना परनिपात कहा जाता है। प्रस्तुत सूत्र उपसर्जनसंज्ञक के पूर्वनिपात का प्रतिपादन करता है।

तो इस प्रकार अधि शब्द का पूर्वनिपात करने पर अधि हरि ङि इस अवस्था में "कृ त्तद्धितसमासाश्च" से सम्पूर्ण समास-समुदाय की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः द्वारा प्रातिपदिक के अवयव सुप् (ङि विभक्ति) का लुक करने से अधिहरि बन जाता है। इसके बाद एकदेशविकृतमनन्यवत् न्यायानुसार इस की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके पुनः सुबुत्पत्ति करके प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके उसका "अव्ययीभावश्च' इस सूत्र से अव्ययसंज्ञा करने पर "अव्ययादाप्सुपः" से सुब्लुक् करने पर अधिहरि रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्र अव्ययीभावश्च । 2.4.18

वृत्ति - अयं नपुंसकं स्यात्। गाः पातीति गोपाः तस्मिन् अधिगोपम् ।

अनुवाद - अव्ययीभावसमास नपुंसक हो।

व्याख्या अव्ययीभावः, च यह पदच्छेद है। "स नपुंसकम् सूत्र से 'नपुंसक' पद की अनुवृत्ति कर ली जाती है। 'च' शब्द जो कि अव्यय है, समुच्चयार्थ प्रयुक्त किया गया है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होगा कि अव्ययीभावसमास भी नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होगा।

सूत्र - नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः । 2.4.83

वृत्ति - अदन्तात् अव्ययीभावात् सुपो न लुक, तस्य पञ्चमीं विना 'अम्' आदेशः स्यात् । गाः पातीति गोपास्तस्मिन् अधिगोपम्।

अधि गोप सु अम्

अनुवाद - अदन्त अव्ययीभावसमास से परे सुप् का लुक् न हो, परन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुप् प्रत्ययों के स्थान पर अम् आदेश हो।

व्याख्या - न. अव्ययीभावात्, अतः, अम्, तु, अपञ्चम्याः यह पदच्छेद है। न एक अव्ययपद है। 'अव्ययीभावात्' तथा 'अतः' पञ्चमी विभक्त्यन्त एकवचनान्त हैं। 'अतः' पद अव्ययीभावात् का विशेषण है जिससे तदन्तविधि होकर अदन्तात् अव्ययीभावात् ऐसा अर्थ होता है। इस सूत्र में 'ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुक् सूत्र से लुक् की तथा "अव्ययादाप्सुपः" सूत्र से स्थानषष्ठ्यन्त 'सुपः' पद की अनुवृत्ति होती है जिसका अर्थ है सुपों के स्थान पर। अपञ्चम्याः का अर्थ पञ्चमी को छोड़कर है, तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्रार्थ यह फलित

होता है कि - अदन्त अव्ययीभावसमास से परे सुप् का लुक् न हो, परन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुप् प्रत्ययों के स्थान पर अम् आदेश हो। इस सूत्र में जो 'तु' अव्ययपद है इसके ग्रहण से विलक्षण अर्थ यह होता है कि पञ्चमी का न तो लुक् होता है न ही अमादेश। यदि सूत्र में तु का ग्रहण नहीं किया जाता तो सूत्र का अर्थ होता कि पञ्चमी को छोड़कर अन्य सुपों का लुक् हो तथा उनके स्थान पर अमादेश हो, इस प्रकार पञ्चमी को अम् आदेश तो नहीं होता लेकिन "अव्ययादाप्सुपः" सुपः से पञ्चमी का लुक् हो जाता जो कि अनिष्ट है।

उदाहरण अधिगोपम् - गाः पाति इति गोपाः (गोपा के रूप विश्वपा की तरह) तस्मिन् गोपि इति इस अस्वपदविग्रह में गोपा ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में अधिकरणरूप विभक्त्यर्थ में विद्यमान अव्यय अधि का गोपा ङि इस सुबन्त के साथ "अव्ययं विभक्ति..." इत्यादि सूत्र से समास करने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च" इस सूत्र से समाससंज्ञा करने पर 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर गोपा अधि इस अवस्था में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा तथा "उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से 'अधि' का पूर्वनिपात

करके अधि गोपा इस अवस्था में समास समुदाय की 'अव्ययीभावश्च सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हो जाने पर 'ह्स्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य सूत्र से ह्रस्व होने पर अधिगोप इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु-प्रत्यय करने पर अधिगोप सु इस अवस्था में "अव्ययादाप्सुपः सूत्र से सुप् का लुक् प्राप्त होने पर 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः" इस सूत्र से सु को अम् आदेश करने पर अधिगोप अम् इस दशा में "अमिपूर्वः" से पूर्वरूप करने पर अधिगोपम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र - तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् । 2.4.84

वृत्ति - अदन्तात् अव्ययीभावात् तृतीया-सप्तम्योर्बहुलम् 'अम्' भावः स्यात्। कृष्णस्य समीपम् उपकृष्णम्। उपकृष्णेन। उपकृष्णे।

("अव्ययं विभक्ति... सूत्र के अन्य उदाहरण - मद्राणां समृद्धिः - सुमद्रम्। यवनानां व्यृद्धिः - दुर्यवनम्। मक्षिकाणामभावः - निर्मक्षिकम्। हिमस्यात्ययः - अतिहिमम्। निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति - अतिनिद्रम्। हरिशब्दस्य प्रकाशः - इतिहरि। विष्णोः पश्चाद् - अनुविष्णु।

योग्यता - वीप्सा - पदार्थाऽनतिवृत्ति - सादृश्यानि यथार्थाः। रूपस्य योग्यम् अनुरूपम्, अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थम्। शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति।)

अनुवाद - अदन्त अव्ययीभावसमास से परे तृतीया और सप्तमी के स्थान पर बहुल रूप से अम् आदेश हो।

व्याख्या - इस सूत्र में तृतीयासप्तम्योः, बहुलम् यह दो पद हैं। अव्ययीभावात्, अतः अम्. यह तीन पद पूर्व सूत्र से अनुवृत्त हैं। पूर्ववत् अतः अव्ययीभावात् का विशेषण है, तृतीयासप्तम्योः में इतरेतरयोगद्वन्द्व समास और स्थानषष्ठी द्विवचनान्त है। तृतीया और सप्तमी के स्थान पर ऐसा अर्थ लब्ध होता है। अम् आदेशात्मक गद है। तो इस प्रकार सूत्र का अर्थ हुआ कि अदन्त अव्ययीभाव समास से परे तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर अम् भाव बहुलप्रकार से होता है।

बहुल का अर्थ शब्दावली में अधिक स्पष्ट करेंगें। इस सूत्र में तो एक प्रकार से विकल्प अर्थ है। इस सूत्र के द्वारा होने वाला अम् भाव विकल्प से मलतब तृतीया और सप्तमी में दो दो रूप बनेंगें, एक अम् भाव से युक्त दूसरा तृतीया तथा सप्तम्यन्त। यह कह सकते है कि पूर्व सूत्र से जहाँ नित्य अम्भाव प्राप्त था उसको बाधकर इस सूत्र से विकल्प से अम् भाव होता है।

उदाहरण (यह अव्ययं विभक्तिसमीप... इत्यादि सूत्र का समीपार्थक अव्यय के समास का उदाहरण है) - **उपकृष्णम् उपकृष्णेन** कृष्णस्य समीपम् इस अस्वपदविग्रह में कृष्ण ङस् उप इस अलौकिक विग्रह में समीपार्थक अव्यय उप का कृष्ण ङस् इस सुबन्त के साथ "अव्ययं विभक्ति... इत्यादि सूत्र से समास करने पर 'कृ त्तद्धितसमासाश्च" इस सूत्र से समाससंज्ञा करने पर 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर कृष्ण उप इस अवस्था में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'

इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा तथा 'उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से 'उप' का पूर्वनिपात करके उपकृष्ण इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके तृतीया एकवचन विवक्षा में टा-प्रत्यय करने पर उपकृष्ण टा इस अवस्था में 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः" इस सूत्र से टा को नित्य अम् आदेश प्राप्त होने पर 'तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् सूत्र से बहुलम् अम्भाव करने पर उपकृष्ण अम् इस दशा में 'अमिपूर्वः" से पूर्वरूप करने पर उपकृष्णम् तथा

अम्भाव के अभाव में टा के स्थान पर इन आदेश आदि विभक्तिकार्य करके उपकृ ष्णेन रूप सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार से सप्तमी में भी अम्भावयुक्त एक रूप तथा उसके अभाव में सप्तमीघटित होकर उपकृष्णे यह रूप बनेंगें।

ध्यातव्य - नित्य अम्भाव, बहुलम् अम्भाव के पञ्चमी को छोड़कर प्रवृत्त होने के कारण तृतीया विभक्ति के प्रत्येक वचन में दो रूप (उपकृष्णम्-उपकृष्णात्, उपकृ ष्णम्-उपकृषणाभ्याम्, उपकृष्णम् उपकृष्णैः), सप्तमी के प्रत्येक वचन में दो रूप (उपकृ ष्णम्-उपकृष्णे, उपकृष्णम्-उपकृषणयोः, उपकृष्णम्-उपकृष्णेषु) तथा पञ्चमी में तो विभक्ति विशिष्टरूप उपकृष्णा, उपकृषणाभ्याम्, उपकृष्णेभ्यः रूप बनेंगें।

- तत्पुरुषः ॥ (अधिकार सूत्र)
- अधिकारोऽयं प्राग्बहुव्रीहेः ॥
- द्विगुश्च ॥
- द्विगुरपि तत्पुरुषसंज्ञकः स्यात् ॥
- द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥ (तत्पुरुष द्वितीया विधि)
- द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह वा समस्यते स च तत्पुरुषः । कृष्णं श्रितः कृष्णश्रित इत्यादि॥

कृष्ण अम् श्रित सु	द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः
कृष्ण श्रित	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
कृष्णश्रित सु	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या..........
कृष्णश्रितः	रुत्वविसर्ग

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥

तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्। शङ्कलया खण्डः शङ्कलाखण्डः । धान्येनार्थो धान्यार्थः । तत्कृतेति किम् ? अक्ष्णा काणः ॥

शङ्कला टा खण्ड सु

शङ्कला खण्ड

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन

सुपो धातुप्रातिपदिकयोः

❖ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ॥

❖ कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत्। हरिणा त्रातो हरित्रातः । नखैर्भिन्नः नखभिन्नः । (प.) कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम् । नखनिर्भिन्नः ॥

हरि टा त्रात

✓ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥

❖ चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत्। यूपाय दारु यूपदारु। (तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः) । तेनेह न रन्धनाय स्थाली।

यूप ङे दारु सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः
यूप दारु	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
यूपदारु सु	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या.........
यूपदारु	स्वमोर्नपुंसकात् ।

❖ वार्तिक अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्

❖ द्विजार्थः सूपः। द्विजार्था यवागूः। द्विजार्थं पयः। भूतबलिः। गोहितम्। गोसुखम्। गोरक्षितम्॥

❖ पञ्चमी भयेन ॥

❖ चोराद्भयं चोरभयम् ॥

चोर ङसि भय सु	पञ्चमी भयेन
चोर भय	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
चोरभय सु	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या.........
चोरभयम्	अतोऽम्, अमि पूर्वः

① हरि ङि. आधि इति कस्य उदाहरणं वर्तते।

a) विभक्तेः

b) समीपस्य

c) अन्तवचनस्य

(d) शब्दप्रादुर्भावः

② समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं ______ संज्ञा स्यात्

a) कारकसंज्ञम्

b) कृदन्तसंज्ञम्

c) तद्धितं

d) उपसर्जनं

३) हरि ङि. आधे सुपो लुक् केन सूत्रेण।

(a) अव्ययादाप्सुपः

(b) तस्य लोपः

(c) सुपो धातुप्रातिपदिकयोः

(d) लोपो व्योर्वलि

(a) समृद्धि अर्थे — सुमद्रम्

(b) व्यृद्धि अर्थे — दुर्यवनम्

(c) शब्दप्रादुर्भावे — इतिहरि

(d) पश्चादर्थे — अनुविष्णु

धन्यवाद !